SOCIAL PSYCHOLOGY

B.A (Hons) Part III
Paper-V
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D
Dept of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU Ara

Question:- How attitude formed? Discuss some of the factors or determinants of attitude formation (मनोवृत्ति का निर्माण कैसे होता है? मनोवृत्ति निर्माण के मुख्य निर्धारकों एवं कारकों की विवेचना करें।)

मनोवृत्ति ~~व्यक्ति~~ मानव का एक अर्जित गुण है। मनुष्य जन्म से किसी के भी प्रति न तो अनुकूल होता है और न तो प्रतिकूल ही होता है। वास्तव में जैसे-जैसे उम्र में वृद्धि होती है, वैसे-वैसे व्यक्ति अपने व्यक्तिगत अनुभव एवं शिक्षण से किसी भी व्यक्ति, वस्तु या घटना तथा स्थान के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक मनोवृत्ति का विकास अथवा निर्माण कर लेता है। मनोवृत्ति के निर्माण अथवा विकास में व्यक्तिगत कारकों, सामाजिक एवं संस्कृतिक कारकों की भी अहम भूमिका होती है। मनोवृत्ति के विकास या निर्माण में कई कारकों का हाथ होता है, जिनमें से कुछ प्रमुख कारकों का वर्णन नीचे क्रमवार किया जा रहा है।-

(i) व्यक्तिगत कारक:- व्यक्तिगत कारकों से तात्पर्य उन कारकों से है जो उस व्यक्ति विशेष को किसी खास व्यक्ति, स्थान तथा समस्या के प्रति खास तरह के Attitude formation में सहायक होती है। यानी उस व्यक्ति के व्यक्तित्व से, ऐसे कारकों का सम्बन्ध होता है। व्यक्तित्व के शीलगुणों तथा attitude में सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया है। मनोवृत्ति के विकास में सहायक ऐसे कारकों में Ego Strength, Need achievement, introversion-extroversion, Dominancy, Anxiety आदि ~~के~~

व्यक्तिगत कारक काफी अहम भूमिका निभाते हैं। Mc. Closky (1958) ने अपने अध्ययन में पाया कि dull minded People में Conservative attitude अधिक विकसित होते हैं और पाई भी जाती है। इसी तरह Motives भी व्यक्ति में मनोवृत्ति निर्माण में काफी सहायता करता है।

(2.) सामाजिक कारक :- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। बहुत सी बातें, परम्परायें एवं विश्वास मनुष्य समाज से सीखता है। यह देखा गया है कि एक समाज विशेष के लगभग सभी व्यक्तियों की मनोवृत्तियों में समानतायें होती हैं। इसमें प्राथमिक समूह एवं द्वितीयक समूह दोनों ही मनोवृत्ति निर्माण में काफी अहम भूमिकायें निभाते हैं। बच्चा Socialization और प्राथमिक समूह से बहुत सी क्रिया कलाप, व्यवहार, आदर्श, रहन-सहन, मानदण्ड, प्रतिमान ग्रहण करता है। बड़ा होने पर संगठन, संस्था आदि से जुड़के विश्वास एवं मूल्यों को अपनाता है। इसी तरह संदर्भ समूह से भी मनोवृत्ति निर्माण होता है। यह देखा गया है कि जिस परिवार में छुआछूत की भावना सहभोजिता की भावना एवं दूसरे जाति के लोगों से मेलजोल कम रहती है। उस परिवार के बच्चे भी उसी तरह के मनोवृत्ति विकसित कर लेते हैं।

इसी तरह देखा जाता है कि बच्चों में खास व्यक्ति, जाति संस्था, स्थान, घटना आदि के अनुकूल या प्रतिकूल मनोवृत्ति की निर्माण में Social learning (सामाजिक शिक्षण) की अहम भूमिका होती है। बच्चे अनुकूलन खासकर Classical Conditioning के द्वारा मनोवृत्तियाँ सीख लेते हैं। बच्चा जब किसी खास व्यक्ति या स्थान के बारे में अपने माता पिता, पड़ोसी आदि द्वारा बार-बार अच्छा कहते सुनता है। अथवा बड़ाई करते सुनता है तो उस बच्चे में उस व्यक्ति या वस्तु के प्रति Positive attitude विकसित हो जाती है। ठीक उसके विपरीत शिकायत या निन्दा करते सुनता है तो उसके प्रति Negative attitude का विकास अनुकूलन द्वारा हो जाता है।

(3) सांस्कृतिक कारक :- समाजशास्त्रियों एवं समाजमनोवैज्ञानिकों तथा मानवशास्त्री इस संदर्भ में इस बात से सहमत हैं कि attitude formation एवं cultural factors में Positive Correlation है। इसमें मार्गेट मीड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Sex & Temprament में इसकी चर्चा की है। इसी तरह रुथ (RUTH) ने भी अपनी पुस्तक Pattern of culture में इस इस तरह की बातें की हैं। आरपेश जाति के लोग शांतिप्रिय एवं दयालु होते हैं जबकि मुंडागुमर जनजाति के लोग आक्रामक एवं लड़ाकू तथा निर्दयी होते हैं। अतः स्पष्ट है कि attitude formation में सांस्कृतिक कारक भी महत्वपूर्ण होते हैं।

(4) सूचनाएँ एवं सूचनातंत्र :- मनोवृत्ति निर्माण में आजकल संचार के माध्यम एवं मौखिक सूचनाओं का भी काफी असरदार भूमिका होता है। यह देखा गया है कि माता पिता, बड़े-बुजुर्ग तथा आस पड़ोस के लोग किसी जाति, व्यक्ति, स्थान, घटना आदि के संदर्भ में जैसी सूचनाएँ देते हैं बच्चों में उसी के अनुकूल या प्रतिकूल मनोवृत्ति विकसित हो जाती है। संचार के माध्यमों में रेडियो, टी०वी० अखबार, इन्टरनेट, व्हाट्स एप्प, इन्स्टाग्राम आदि की उल्लेखनीय भूमिका होती है। यह सही है कि सभी प्रकार की सूचनाओं का प्रभाव व्यक्ति विशेष पर नहीं पड़ती है। कुछ सूचनाएँ ज्यादा असरदायक होती हैं। मेयर्स ने अपने अध्ययन में पाया कि सूचना देने वाला व्यक्ति यदि अधिक विश्वसनीय होता है तो उसका प्रभाव ज्यादा पड़ता है।

(5) संवेगात्मक कारक :- बचपन के तीव्र संवेगात्मक अनुभव का प्रभाव भी व्यक्ति के मनोवृत्ति पर पड़ता है। जब बच्चा बचपन में तीव्र साम्प्रदायिक दंगों, जातीय तनावों को देखता है अथवा उसका परिवार भुगतता है तो उस बच्चे को गहरा आघात लगता है और कोमल मन को झकझोर देता है। फलतः उस बच्चे में उस जाति या धर्म के लोगों के प्रति Negative attitude विकसित हो जाता है।

(6) रूढ़ियुक्तियाँ (Stereotypes) :- प्रत्येक समाज एवं संस्कृति की कुछ विशेष तथा निश्चित रूढ़ियुक्तियाँ होती हैं।

जिनका प्रभाव उस समाज या संस्कृति के अन्य लोगों (Members) पर पड़ता है। इस तरह उस समाज के सदस्यों में खास प्रकार की मनोवृत्तियों का निर्माण हो जाता है। हिन्दू संस्कृति में गाय एवं गंगा को पवित्र माना गया है। इसलिए हिन्दुओं का इन दोनों के प्रति Positive attitude develop हुआ रहता है, जबकि अन्य संस्कृति एवं धर्म के लोग इसे नहीं मानते हैं। इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि stereotype भी मनोवृत्ति के निर्माण में सहायक होते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि मनोवृत्ति एक अर्जित प्रवृत्ति है, जिसे हम समाज, परिवार एवं अन्य व्यक्तिगत कारकों के प्रभाव में आकर सीखते हैं, या, ग्रहण करते हैं। इसके अलावे इसके निर्माण पर अन्य कारकों का, रूढ़ियुक्तियों एवं सुलभताओं आदि का भी प्रभाव पड़ता है, जिनका वर्णन किया जा चुका है।

रमेश्वरी
12.09.2020